E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(2): 06-07
Received: 04-05-2019
Accepted: 08-06-2019

डॉ अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

संयुक्त राज्य संघ में सुधार

डॉ अवधेश कुमार

संयुक्त राष्ट्र संघ आज यह बात साबित करने में सफल रहा है कि उसका कार्य वैश्विक स्तर पर समस्याओं का सम्बन्ध किस प्रकार की समस्या से है। यू0एन0 एक संस्था के रूप में काफी सफल रहा है। यह अर्न्तराष्ट्रीय शन्ति एवं व्यवस्था बनाने में सफल रहा है। गरीबी, अशिक्षा, जानलेवा बीमारियाँ, जनसख्या विस्फोट, वातावरण की समस्या एवं ड्रग व्यापार में काफी सक्रिय रहा है। इनमें सजग रहना यू0एन0 का मुख्य उद्देश्य रहा है। बेरोजगारी, गरीबी ज्वलन्त उदाहरण रहे गृह युद्ध का मुख्य रूप से। साउथ अफ्रीका, लैटिन अमरीका की मुख्य समस्या यही रही है। यू0एन0 एक सभ्य समाज की कल्पना करता है जो आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके तो जिम्मेदारी काफी कम हो जायेगी। गृहयुद्ध का पड़ोसी भी हमेशा परेशान रहता है।
यू0एन0 के कुछ अनुच्छेद उसे खुद ही हस्तक्षेप करने से रोकते हैं एवं जहाँ भी जरूरत होगी वह मानवता के नाम पर असामाजिक क्रियाकलापों में हस्तक्षेप करेगा। तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो जिम्मेदारी है वह निभा सकेगा। उस अशान्ति की जड़ में संयुक्त राष्ट्र पहुँच जायेगा। आई0एल0ओ0 एक संस्था है जो गरीब मजदूरों की रक्षा करती है एवं राष्ट्रीय स्तर पर अधिकार दिलाती है। यू0एन0 हर मुद्दे पर इकाईयों खोल रखी है जो समग्र रूप से यू0एन0 शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित करेंगा।

U.N .Says- "Let us strike at the root".

परन्तु जो भावना लेकर यू0एन0 की स्थापना की गयी थी वह अपनी जिम्मेदारी निभा सकी, विश्व के विभिन्न द्वीपों में गरीबी, एड्स एवं विभिन्न समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। परन्तु यू0एन0 वहाँ पर ईमानदारी से सक्रिय नहीं है। इसी समस्या को ध्यान में रखकर विद्वान 'रिफार्म ऑफ यू0एन0' की बात करते हैं क्योंकि जो वर्तमान संरचना है उस पर संस्था अक्षम है अतः सुधार की बात चली आ रही है कि यू0एन0 की संरचनात्मक सुधार की बात की जा रही थी। 70 वर्ष पहले का जो शक्ति संतुलन रहा होगा वह आज बदल चुका है उन राष्ट्रों को अपने योगदान के हिसाब से भागीदारी नहीं मिली है। इन सारी समस्या को सामने रखकर बदलाव या सुधार की बात की जा रही है। हमें सिर्फ सुधार में इतना ही करना है कि वह सुधरे हमें उसकी पुर्नसंरचना नहीं करनी है ताकि यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बनी रह सके। प्रस्तावित सुधार निम्नलिखित हो सकते हैंः–

1. जब भावना में लोकतांत्रिक अपनाया गया है तो सुरक्षा परिषद में वृद्धि की जानी चाहिए। यह विवाद का मुद्दा है कितने स्थायी एवं कितने अस्थायी सदस्य होगें।
2. सुरक्षा एवं अर्थव्यवस्था में किस तरह से संस्थाओं को प्रथमता के आधार पर दिये जाने चाहिए। संस्थाओं के सदस्य भी विदेशी होते हैं जो काफी अनिष्पक्ष होते हैं जो अपनी देश की हितों के आधार पर देते हैं न कि गरीबी, भूखमरी, बीमारियों के आधार पर।
3. वीटों हटाने पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का महत्व भी खत्म हो जायेगा। ब्रिटेन, अमरीका एवं रूस के बिना अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संभव नहीं है। ब्रिटेन से ज्यादा भारत सहयोग कर चुका है। यू0एन0 में अन्तः भारत की भी दावेदारी ठीक है। यह एक खोखली संस्था बन जायेगी। सुधार करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि संस्था बनी रहे वरन् सुधार 'लिमिटेशन' के हिसाब से भी हो जाए। हमें व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक दोनों पक्षों को ध्यान में रखने चाहिए।

यू0एन0 ने समय–समय पर अपनी अशान्ति के कारणों के मूल को समझने का प्रयास किया है। यू0एन0 यह प्रयास करता है कि समस्याओं को निचले स्तर पर ही खत्म कर दिया जाय तो समस्या उठ ही नहीं पायेगी। 74 वर्षों में विभिन्न बार यह बात उठायी गयी कि जिस चार्टर से यू0एन0 ने अपनी शुरूआत की थी क्या वह आज भी औचित्यपूर्ण है। तब यू0एन0 में सुधार की बात सामने आयी है।

चार्टर में यह बात कही गयी थी कि यू0एन0 जहाँ तक सम्भव होगा वह सहमति हासिल करेगा एवं 5 राष्ट्रों को स्थायी सहमति आवश्यक थी जिन्होंने यू0एन0ओ0 को स्थायी बनाया था। परन्तु इन राष्ट्रों ने उसका दुरूपयोग भी किया है। जिसमें युद्ध विशेषाधिकारों का ये दुरूपयोग करते हैं ये ही सर्वाधिक विवाद के कारण है। तब यू0एन0ओ0 की सुरक्षा परिषद पर ज्यादा ध्यान जाता है। यह ही ऐसा सदन है जिसका निर्णय बाध्यकारी है।

'रिफार्म ऑफ यू0एन0ओ0'– हम उसे हद तक ही सुधार कर सकते हैं जिस हद तक यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था भी बनी रहे। अगर हम सफलता देखे तो यू0एन0 सामाजिक–आर्थिक, उपनिवेशवाद के विरूद्ध एवं विश्व युद्धों को रोकने में सफल रहा है। राष्ट्रों की मुक्ति एवं उनका उत्थान यू0एन0 ने किया। राष्ट्रों ने जातीय 'डिसक्रिमीनेशन' को दूर किया। शीतयुद्ध में हथियारों की होड़ थी यू0एन0 ने उसमें काफी कमी की है।

शीत युद्ध में माना जा रहा था कि परमाणु हथियार की संख्या 20–25 हो जायेगी परन्तु यू0एन0 के प्रयास से यह उतनी नहीं हो पायी है। यह मानवता के लिए बहुत अच्छा रहा है। भले ही वह विशेषाधिकारों को नहीं रोक पाया है। परन्तु हम उसे असफल नहीं कर सकते हैं। अभी भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सहमति नहीं बन पायी है कि पाँच देशों के वीटो पॉवर हटा दिया जाय। परन्तु जो उपलब्धियाँ है उसकी अपेक्षा में दुरूपयोग को हम नकार सकते हैं। आज यू0एन0ओ0 के बिना शान्ति एवं सुरक्षा की कल्पना अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में संभव नहीं दिखायी पड़ती है। हमारा सुझाव व्यावहारिक होनी चाहिए।

यू0एन0 के महासचिव खुद ही एक समिति सितम्बर, 2003 में एक समिति गठित की गयी जिसके अध्यक्षता थाईलैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री आनन्द पन्याराचुन ने की। इस आयोग में भारत की तरफ से सतीश नागा एवं पाक से नफी सादिफ थे ये दोनों सदस्य दक्षिण एशियाई समस्या में रखा गया। 2004 में "A More Secured World : Our Shared Responsibility" नाम से रिपोर्ट सौपी गयी। इसमें निम्नलिखित समस्या दिया गया था। इस समिति को जो कार्य क्षेत्र सौपें गये वो थे–

1. आर्थिक एवं सामाजिक खतरे जैसे–गरीबी, महामारी, जनसंख्या विस्फोट, वातावरण इत्यादि।
2. अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष एवं वैमनस्यता का समाधान।
3. आन्तरिक हिंसा एवं गृहयुद्ध राज्य विघटन, नरसंहार जैसे मुद्दे शामिल थे। जैसे–अफगानिस्तान, सूडान, ईराक, युगोस्लाविया और सोमालिया के मुद्दे प्रमुख थे।
4. जन संहारक हथियारों के प्रसारण सम्बंधी था।
5. आतंकवाद।
6. संगठित अपराध (Organised crime) जैसे–अन्तर्राष्ट्रीय मादक पदार्थों की तस्करी, मानव अंगों की तस्करी।

रिपोर्ट की विशेषतायें– इस समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिये थे–

1. शान्ति निर्माण, शान्ति की रख–रखाव या शान्ति स्थापित करने के तरीकों से सम्बंधित कोई भी ऑपरेशन सुरक्षा परिषद की अनुमति के बिना नहीं चलाया जाना चाहिए।
2. यू0एन0 निर्णय लेते समय सिर्फ मुद्दे की गंभीरता को ध्यान में रखेगा एवं गंभीरता से बल का इस्तेमाल करना। न करने से अच्छा है कि यू0एन0 को इस्तेमाल करना चाहिए लेकिन बल का प्रयोग अंतिम उपाय के रूप में ही किया जाना चाहिए।
3. परमाणु अप्रसार से संबंधित में कहा कि सभी राष्ट्रों को एक अतिरिक्त प्रोटोकाल पर दस्तखत करना चाहिए जो IAEA की तरफ से लाया गया हो एवं IAEA को यह स्वतंत्रता मिल सके कि वह देखभाल कर सके की नागरिक/सैनिक (Civil/mititary) उद्देश्य को क्या कार्य चल रहा है। वह आकस्मिक निरीक्षण भी कर सके।
4. सुरक्षा परिषद के विषय में कहा कि ये दो मॉडल हैं:

मॉडल–ए में समिति कहती हैं कि एस0सी0 में सदस्य के लिए 9 नये सदस्य आयेंगे एवं विश्व का प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

- Asia Pecific - 2 Seat
- Africa - 2 Seat
- Europe - 1 Seat
- America - 1 Seat

ये स्थायी सदस्यता (6 सदस्य) पायेगे

इनकों वीटों नहीं मिलेगा जबकि सारे विशेषाधिकार मिलेगा। बाकी के तीन सदस्यों को अस्थायी सदस्य बनाया जायेगा जो कि दो साल तक रहेगें। समिति मानती है कि वीटो पॉवर के मुद्दे को न छेड़ा जाय एवं ये ही पाँच सदस्य ठीक प्रकार से नियंत्रित कर सके, ये सिर्फ संकुचित मुद्दों पर ही वीटों इस्तेमाल कर सके। जिन राष्ट्रों को अस्थायी सदस्यता मिल रही है वह भी काफी है। क्योंकि वे आम सहमति बना सके तो काफी ठीक रहेगा।

मॉडल–बी : सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों की संख्या को नहीं छेड़ा जायेगा। जबकि नयी श्रेणी बनायी जाये:–

1. स्थायी सदस्य - Permanent members
2. अर्ध. स्थायी सदस्य - Semi permanant members
3. अस्थायी सदस्य - Non-Permananet members

अर्ध. स्थायी सदस्य कुछ मद्दों को छोड़कर बाकी सभी निर्णय में ये महत्वपूर्ण होगें इनकी संख्या 8 होनी चाहिए। अस्थायी सिर्फ एक सस्य ही चुना जायेगा।

निष्कर्ष

अन्त में यह कहा गया है कि 9 अतिरिक्त सदस्यों ने एक अलग विचार दिया एवं 5 ने अलग विचार दिया तो अन्त में 9 सदस्यों का एक नैतिक दबाव बनेगा तो बाकी के पांच पर भी नैतिक दबाव बनाया जा सकते हैं। समिति ने यह भी कहा कि मुद्दों को सिर्फ चार्टर के 7 में आने वाले ही मुद्दे आयेंगे वही एस0सी0 में जायेगे। बाकी के मुद्दे आमसभा में निस्तारित किया जायेगा। कोई विवादास्पद मुद्दा स्वतः सुरक्षा परिषद में आमसभा में चले आयेगे।

संदर्भ

1. एम0 अनिता एवं मोहम्मद औरंगजेब, पाकिस्तानः इनसाइक्लोपीडिया ऑफ संस्कृतिविलिटी'', 2012
2. डा0 दीनानाथ वर्मा–अन्तर्राष्ट्रीय संबंध।
3. डॉ0 महेन्द्र कुमार–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति।
4. अफगानिस्तान, द वर्ल्ड फैक्ट बुक, सेन्ट्रल इनटेलीजेंस एजेन्सी, 2007
5. एम.सी. पीले एवं बी0एल0 फिनलेसन एवं मैकमोहन, टी0एस0 ''अपडेटेड वर्ल्ड मैन ऑफ द कोपेन गीगर क्लाइमेट क्लासिफिकेशन, 2007